पत्थर की मूरत बोल पड़ी

पत्थर की मूरत बोल पड़ी

पत्थर की, मूरत बोल पड़ी, क्या मुझे, मनाने आया है ॥
तेरे घर में, जननी तड़प रही ॥, क्या तुझे, तरस नहीं आया है ,
पत्थर की, मूरत बोल पड़ी.....

घर में तेरी, मईया भूखी है, क्या उस से, भोजन की पूछी ॥
मुझे भोग, लगाने को बेटा ॥, यह छप्पन, भोग लाया है ,
पत्थर की, मूरत बोल पड़ी.....

प्यासी घर में, तेरी माँ बैठी, बूंद बूंद को, बेटा तरस रही ॥
क्या मुझे, पिलाने को बेटा ॥, तूँ भर भर, लोटा लाया है ,
पत्थर की, मूरत बोल पड़ी.....

तेरी माँ के, कपड़े फ़टे हुए, एक साड़ी, तक ना लाया है ॥
और मुझे, ओढ़ाने को बेटा ॥, तूँ लाल, चुनरिया लाया है ,
पत्थर की, मूरत बोल पड़ी.....

तेरी एक, झलक को पाने को, कब से तेरी, मईया तरस रही ॥
मेरी एक, झलक ही पाने को ॥, तूँ मीलों, चलकर आया है ,
पत्थर की, मूरत बोल पड़ी.....

तूँ अपनी, माँ को मना लेना, सीने से, उसे लगा लेना ॥
तेरे सारे, कष्ट ही मिट जाएंगे ॥, क्यों मुझे, मनाने आया है ,
पत्थर की, मूरत बोल पड़ी.....

सुन लो अब, दुनियाँ वालो तुम, अपने मात पिता की, सेवा करो ॥
उस में ही, माँ दुर्गा बैठी ॥, महाँ माया की, सब माया है ,
पत्थर की, मूरत बोल पड़ी.....

अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33389/title/PATHAR-KI-MOORAT-BOL-PADI

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |